UGC Approved, Journal No. 48416 (IJCR), Impact Factor 6.0 ISSN : 2393-8358

Interdisciplinary Journal of Contemporary Research

An International Peer Reviewed Refereed Research Journal

Vol. 11, No. 1 January, 2024

PEER REVIEWED JOURNAL

EDITOR

Dr. H.L. Sharma
Associate Professor
Shimla, Himachal Pradesh

Dr. Hans Prabhakar Ravidas
Assistant Professor
Department of Performing Arts,
National Sanskrit University, Tirupati

Dr. Anil Kumar
Assistant Professor, Department of History
Rajdhani College, University of Delhi

Published by
VPO Nandpur, Tehsil-Jubbal, District-Shimla, Himachal Pradesh
email : ijcrournal971@gmail.com, Website : ijcrjournals.com

▸	उच्च माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों की कोचिंग के प्रति अभिरूचि का अध्ययन **डॉ0 शिवम सक्सेना, डॉ0 अमर बहादुर एवं डॉ0 मनोज कुमार शर्मा**	93-96
▸	विद्यालयी बच्चों पर प्राणायाम का सकारात्मक प्रभाव **अमृता कुमारी एवं आलोक कुमार पाण्डेय**	98-102
▸	प्रशिक्षण महाविद्यालयों में शिक्षकों एवं विद्यार्थियों की दंड के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन **मनेन्द्र कुमार लहकोडिया, विनोद कुमार शर्मा एवं डॉ0 मनोज कुमार शर्मा**	103-106
▸	माध्यमिक स्तर के राजकीय एवं निजी विद्यालयों में अध्यनरत विद्यार्थियों में भारतीय संस्कृति के स्तर का अध्ययन **गजानंद सैन एवं डॉ0 मोहनलाल मेघवाल**	107-109
▸	माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की सामाजिक वंचना का अध्ययन **महेश चंद जाटव, अमन कुमार एवं डॉ0 मनोज कुमार शर्मा**	110-112
▸	आधुनिक भारत में प्रचलित पश्चिमी उपनिवेशवादी 'कास्ट' की संकल्पना का अवलोकन और समीक्षा **डॉ0 ओंकार चतुर्वेदी**	113-116
▸	उच्च प्राथमिक एवं माध्यमिक स्तर के विद्यालयों के संस्थाप्रधानों की कार्यरत जीवन की गुणवत्ता का अध्ययन **जयसिंह जाटव, ज्योति कश्यप एवं डॉ0 मनोज कुमार शर्मा**	117-120
▸	करौली जिले के सरकारी व गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की कक्षा शिक्षण के प्रति जवाबदेही का तुलनात्मक अध्ययन **श्री जगदीश प्रसाद शर्मा, श्री छैल बिहारी शर्मा एवं डॉ0 मनोज कुमार शर्मा**	121-125
▸	माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में नए सीसीई पैटर्न के अनुसार पढ़ाई जाने वाले पाठ्यक्रम का विद्यार्थियों अध्यापकों एवं अभिभावकों के मध्य पाठ्यक्रम संतुष्टीकरण का विश्लेषणात्मक अध्ययन **श्रीमती मुकेशी मीना, श्री नितेंद्र कुमार शर्मा एवं डॉ0 मनोज कुमार शर्मा**	126-128
▸	स्वामी विवेकानन्द के दार्शनिक एवं शैक्षिक चिन्तन का अध्ययन **श्री मनेन्द्र कुमार लहकोडिया, श्री जगदीश प्रसाद शर्मा एवं डॉ0 मनोज कुमार शर्मा**	129-132
▸	सामान्य वर्ग व अन्य पिछड़ा वर्ग के बी0एड0 में अध्यनरत प्रशिक्षणार्थियों के व्यक्तित्व एवं समायोजन का अध्ययन **विनोद कुमार शर्मा, मो0 आरिफ एवं डॉ0 मनोज कुमार शर्मा**	133-136
▸	स्नातक स्तर पर विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण का शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव **मोहम्मद रफी एवं डॉ0 माहेजबी**	137-139
▸	सामान्य एवं अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों की नारी की सामाजिक स्वतंत्रता एवं नारी समानता के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन **विष्णु कुमार शर्मा, डॉ0 विवेक मिश्रा एवं डॉ0 मनोज कुमार शर्मा**	140-142
▸	The state of Women's Education in India impacting their Work Participation Rates with Special Reference to the Handloom Industry of Pilkhuwa **Anamika Pandey**	143-152
▸	Exploring the Theoretical Foundations of Animal-Assisted Therapy in Alleviating Loneliness among the Geriatric Population **Devyani Awasthi**	153-157

UGC Approved Journal No. 48416 (An International Peer Reviewed Refereed Research Journal) Impact Factor : 6.0
Interdisciplinary Journal of Contemporary Research, Vol. 11, No. 1, January, 2024 ISSN : 2393-8358

उच्च प्राथमिक एवं माध्यमिक स्तर के विद्यालयों के संस्थाप्रधानों की कार्यरत जीवन की गुणवत्ता का अध्ययन

जयसिंह जाटव
कम्प्यूटर अनुदेशक, वीणा मैमोरियल कॉलेज ऑफ एजुकेशन, पदेवा, करौली (राज0)
ज्योति कश्यप
सहायक आचार्य, वीणा मैमोरियल कॉलेज ऑफ एजुकेशन, पदेवा, करौली (राज0)
डॉ0 मनोज कुमार शर्मा
प्राचार्य, वीणा मैमोरियल कॉलेज ऑफ एजुकेशन, पदेवा, करौली (राज0)

सारांश

कार्यरत जीवन की गुणवत्ता सम्प्रत्यय को अब तक हम उद्योग, व्यापार, प्रबंधन तथा व्यावसायिक उपक्रम की दृष्टि से देखते आये है। किन्तु वर्तमान में यह अनुभूत होता है कि शिक्षा के क्षेत्र में भी कार्यरत जीवन की गुणवत्ता की उपयोगिता शिक्षा प्रशासन, शिक्षा प्रबंध तथा शिक्षण अधिगम पर्यावरण के क्षेत्र में भी उल्लेखनीय है। विज्ञान तकनीकी तथा शैक्षिक विचाराधाराओं में परिवर्तन, शिक्षा नीतियों में सुधार तथा उत्तरदायित्वों की वृद्धि के परिप्रेक्ष्य में शिक्षा क्षेत्र में मौजूद निकायों अथवा इकाईयों में कार्यरत नेतृत्वकर्ता की विद्यालयी कार्यरत जीवन की गुणवत्ता से संबंधित जानकारी भी आवश्यक होती जा रही है।

राजस्थान शिक्षा विभाग में विद्यालयी शिक्षा के प्रचार प्रसार हेतु प्रारम्भिक शिक्षा निदेशालय के अंतर्गत प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक विद्यालयों के संस्था प्रधान अपनी सेवाऐं प्रदान कर रहे है। जबकि आयुक्त माध्यमिक शिक्षा विभाग के अधीन माध्यमिक तथा उच्च माध्यमिक विद्यालयों के संस्था प्रधान अपने कर्त्तव्यों की पूर्ति कर रहे है। चूंकि दोनों ही प्रकार के संस्था प्रधान पद, वेतनमान, विद्यालय स्तर, कार्यरत परिस्थितियों एवं प्राप्य अधिकारों की दृष्टि से अलग–अलग स्थान रखते है। अतः प्रथम दृष्टया माना जाता है कि दोनों ही प्रकार के संस्थाप्रधानों की विद्यालयी कार्यरत जीवन की गुणवत्ता में स्वभाविक अंतर होगा तथा अन्य क्षेत्र तथा जिले की भिन्नता, लिंग की भिन्नता, जाति की भिन्नता, आयु की भिन्नता, सेवा अवधि की भिन्नता आदि के आधार पर भी संस्था प्रधानों की विद्यालयी कार्यरत जीवन की गुणवत्ता स्वभाविक रूप से अलग–अलग मानी जाती है।

संस्थाप्रधानों को क्षतिपूर्ति के रूप में विभाग द्वारा दिया जा रहा उचित प्रतिफल यथा चिकित्सा सुविधाऐं, विभगीय वेतन पारिश्रमिक सम्मान तथा भत्ते आदि उनकी कार्यरत जीवन की गुणवत्ता को औसत से अधिक करने में सहायक पाये गये। राजकीय तथा निजी विद्यालयों के संस्थाप्रधानों की विद्यालयी कार्यरत जीवन की गुणवत्ता में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया। ग्रामीण तथा शहरी विद्यालयों के संस्थाप्रधानों की विद्यालयी कार्यरत जीवन की गुणवत्ता के के तृतीय एवं षष्ठम आयामों क्रमशः मानवीय धार्यक्षमता विकासावसर, कार्यजीवन संतुलन पर उपर्यक्त दोनों की प्रकार के विद्यालयों के संस्थाप्रधानों में सार्थक अंतर पाया गया।

प्रस्तावना

संस्थाप्रधान विद्यालय का नेता होता है और उसका प्रमुख स्थान होता है। विद्यालय प्रशासन तथा प्रबंध का मुख्य घटक होता है। इसके मुख्य दो उत्तरदायित्व होते है, प्रशासन करना तथा पंर्यवेक्षण करना। उसका शिक्षण अधिगम की क्रियाओं से लगाव होता है। विद्यालय को प्रशासन एवं प्रबंधन की सभी क्रियाओं पाठ्यक्रम, शिक्षकों, विधियों, प्रविधियों, सहायक क्रियाओं, सहायक सामग्री आदि की व्यवस्था करनी होती है। किसी विद्यालय की कार्यकुशलता, गुणवत्ता, विद्यालय का स्तर तथा वातावरण संस्था प्रधान के व्यक्तित्व, वृत्तिक दक्षता तथा कार्य कौशल पर निर्भर करती है। विद्यालय का शैक्षिक प्रारूप अनुशासन व्यवस्था तथा प्रबंधन का नियंत्रण संस्था प्रधान की प्रबंधन कुशलता का परिणाम होता है। विद्यालय का व्यवस्थात्मक पर्यावरण संस्था प्रधान के व्यक्तित्व का प्रतीक होता है।

कार्यरत जीवन की गुणवत्ता सम्प्रत्यय को अब तक हम उद्योग, व्यापार, प्रबंधन तथा व्यावसायिक उपक्रम की दृष्टि से देखते आये हैं। किन्तु वर्तमान में यह अनुभूत होता है कि शिक्षा के क्षेत्र में भी कार्यरत जीवन की गुणवत्ता की उपयोगिता शिक्षा प्रशासन, शिक्षा प्रबंध तथा शिक्षण अधिगम पर्यावरण के क्षेत्र में भी उल्लेखनीय है। विज्ञान तकनीकी तथा शैक्षिक विचाराधाराओं में परिवर्तन, शिक्षा नीतियों में सुधार तथा उत्तरदायित्वों की वृद्धि के परिप्रेक्ष्य में शिक्षा क्षेत्र में मौजूद निकायों अथवा इकाईयों में कार्यरत नेतृत्वकर्ता की विद्यालयी कार्यरत जीवन की गुणवत्ता से संबंधित जानकारी भी आवश्यक होती जा रही है।

राजस्थान शिक्षा विभाग में विद्यालयी शिक्षा के प्रचार प्रसार हेतु प्रारम्भिक शिक्षा निदेशालय के अंतर्गत प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक विद्यालयों के संस्था प्रधान अपनी सेवाऐं प्रदान कर रहे है। जबकि आयुक्त माध्यमिक शिक्षा विभाग के अधीन माध्यमिक तथा उंच्च माध्यमिक विद्यालयों के संस्था प्रधान अपने कर्त्तव्यों की पूर्ति कर रहे है। चूंकि दोनों ही प्रकार के संस्था प्रधान पद, वेतनमान, विद्यालय स्तर, कार्यरत परिस्थितियों एवं प्राप्य अधिकारों की दृष्टि से अलग–अलग स्थान रखते है। अतः प्रथम दृष्टया माना जाता है कि दोनों ही प्रकार के संस्थाप्रधानों की विद्यालयी कार्यरत जीवन की गुणवत्ता में स्वभाविक अंतर होगा तथा अन्य क्षेत्र तथा जिले की भिन्नता, लिंग की भिन्नता, जाति की भिन्नता, आयु की भिन्नता, सेवा अवधि की भिन्नता आदि के आधार पर भी संस्था प्रधानों की विद्यालयी कार्यरत जीवन की गुणवत्ता स्वभाविक रूप से अलग–अलग मानी जाती है।

समस्या कथन

"उच्च प्राथमिक एवं माध्यमिक स्तर के विद्यालयों के संस्थाप्रधानों की कार्यरत जीवन की गुणवत्ता का अध्ययन।"

शोध अध्ययन में प्रयुक्त शब्दों की क्रियान्वित व्याख्या

कार्यरत जीवन की गुणवत्ता –

गुणवत्ता संकेतवाचक रूप से संबंधित सम्प्रत्य है। कार्यरत जीवन की गुणवत्ता का सम्प्रत्यय अव तक उद्योग, व्यापार, प्रबंध तथा व्यावसायिक उपक्रमों में ही दृष्टिगत होता था। लेकिन वर्तमान में शिक्षा के क्षेत्र में भी कार्यरत जीवन की गुणवत्ता का उतना ही महत्व है जितना अन्य क्षेत्रों में। शिक्षा में कार्यरत जीवन की गुणवत्ता का सम्प्रत्यय शिक्षा–प्रशासन, शिक्षा–प्रबंध तथा शिक्षण–अधिगम पर्यावरण के क्षेत्र में दृष्टिगत हो रहा है।

संस्था प्रधान

डा0 जसवंत सिंह ने शिक्षा–प्रक्रिया में विद्यालय के संस्था प्रधानों का विशेष महत्व बताया है। विद्यालय पद्धति की सफलता उसकी कलापूर्ण एवं संतुलनात्मक योग्यता पर निर्भर करती है।

उच्च प्राथमिक विद्यालय के संस्था प्रधानों से आशय प्रारम्भिक शिक्षा विभाग के अधीन प्राथमिक विद्यालय के तृतीय श्रेणी अध्यापक की लम्बी सेवा अवधि के वाद विभागीय पदोन्नति से चयनित द्वितीय वेतन श्रंखला में नियुक्त स्नातक तथा बीएड योग्यताधारी वे प्रधानाध्यापक जो उच्च प्राथमिक विद्यालयो के मुखिया समझे जाते हैं।

विद्यालय

विद्यालय को अंग्रेजी में स्कूल कहते है इसका कुछ आभास यूनानी शब्द स्कॉल से मिलता है। जिसका अर्थ अवकाश होता है। ऐसा लगता है कि प्राचीन यूनान में अवकाश के क्षणों का उपयोग आत्म विकास के लिए किया जाता था और इन्होंने इसका अभ्यास एक निश्चित स्थान पर करना प्रारम्भ किया जिसको उन्होने विद्यालय की संज्ञा दी।

समस्या का औचित्य

- विभाग के लिए महत्व
- सेवारत प्रशिक्षण संस्थाओं के लिए महत्व
- संस्था प्रधानों के लिए महत्व
- समाज कल्याण हेतु महत्व

शोध अध्ययन के उद्देश्य

- संस्था प्रधानों की विद्यालयी कार्यरत जीवन की गुणवत्ता का अध्ययन करना।
- राजकीय तथा निजी विद्यालयों के संस्था प्रधानों की विद्यालयी कार्यरत जीवन की गुणवत्ता में तुलना करना।
- ग्रामीण तथा शहरी विद्यालयों के संस्थाप्रधानों की विद्यालयी कार्यरत जीवन की गुणवत्ता में तुलना करना।

शोध अध्ययन की परिकल्पनाऐं

- संस्थाप्रधानों की (कुल न्यादर्श पर) विद्यालयी कार्यरत जीवन की गुणवत्ता प्रमापनी व क्षेत्रों पर औसत स्तर की नहीं होती है।
- राजकीय तथा निजी विद्यालयों के संस्थाप्रधानों की विद्यालयी कार्यरत जीवन की गुणवत्ता में कोई सार्थक अंतर नहीं होता है।
- ग्रामीण तथा शहरी विद्यालयों के संस्थाप्रधानों की विद्यालयी कार्यरत जीवन की गुणवत्ता में कोई सार्थक अंतर नहीं होता है।

शोध अध्ययन का परिसीमांकन

- प्रस्तुत शोध अध्ययन सवाई माधोपुर एवं भरतपुर जिले तक ही सीमित रखा गया है।
- शोध अध्ययन के लिए उच्च प्राथमिक तथा माध्यमिक विद्यालय के संस्थाप्रधानों का चयन किया गया।
- शोध में राजकीय एवं अराजकीय विद्यालयों को ही सम्मिलित किया गया है।
- शोध अध्ययन में कुल 80 संस्थाप्रधानों को सम्मिलित किया है।

शोध अध्ययन का प्रारूप

शोध अध्ययन हेतु आदर्शमूलक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया शोध कार्य में जनसंख्या के रूप में प्रत्येक जिले के 20–20 (10 उच्च प्राथमिक विद्यालयों के संस्था प्रधान तथा 10 माध्यमिक विद्यालयों के संस्थाप्रधान) तथा 20–20 निजी (10 उच्च प्राथमिक तथा 10 माध्यमिक) विद्यालयों के संस्थाप्रधानों को सोद्देश्य–यादृच्छिक विधि से चयनित किया गया।

शोध उपकरण के रूप में परिपृच्छा, सावलोकन, साक्षात्कार, समाजमिति विधि एवं मनोवैज्ञानिक परीक्षण आदि का प्रयोग किया गया। आंकडों के सांख्यिकीय विश्लेषण हेतु प्रतिशत प्राप्तांको का उपयोग किया गया।

शोध अध्ययन का सांख्यिकीय विश्लेषणः–

सारणी संख्या 01 : कुल न्यादर्श पर संस्थाप्रधानों की विद्यालयी कार्यरत जीवन की गुणवत्ता प्रमापनी पर प्राप्त मध्यमान व मानक विचलन

क्र.सं.	आयाम का नाम	कुल न्यादर्श (N=80)	
		मध्यमान	मानक विचलन
1	कुल	328.888	29.569
2	स्वस्थ्य कार्य परिस्थितियां	56.110	5.611
3	समुचित क्षतिपूर्ति	42.910	5.531
4	मानवीय धार्य क्षमता–विकासावसर	48.890	4.786
5	व्यवसायिक वृद्धि के अवसर	42.750	5.649
6	कार्य संगठनात्मकता के विधान	48.600	6.284
7	कार्यजीवन संतुलन	44.410	5.778
8	सामाजिक प्रसंगिकता	45.210	3.882

अतः निष्कर्ष स्वरूप– समाज के द्वारा संस्थाप्रधानों के कार्यो की सराहना, उसकी समाज में प्रासंगिकता, समाज की प्रतिक्रिया तथा मानसिक संतुष्टि, शिक्षा व्यवसाय के प्रति सामाजिक प्रासंगिकता को महत्व देती पायी गर्यी जो कि संस्था प्रधान के कार्यरत जीवन की गुणवत्ता के लिए सहायक पायी गयी।

सारणी संख्या 02 : राजकीय तथा निजी विद्यालयों के संस्थाप्रधानों की विद्यालयी कार्यरत जीवन की गुणवत्ता एवं आयामों पर मध्यमान, मानक विचलन व टी–मान

आयाम का नाम	राज. वि. के संस्थाप्रधान (N=40)		निजी वि. के संस्थाप्रधान (N=40)		टी–मान	सार्थकता स्तर
	मध्यमान	मा.विचलन	मध्यमान	मा.विचलन		
कुल	332.850	25.889	324.925	32.205	1.213	NS
स्वस्थ कार्य परिस्थितियां	57.500	4.712	54.725	6.029	2.293*	S
समुचित क्षतिपूर्ति	43.075	4.655	42.750	6.248	0.264	NS
मानवीय धार्यक्षमता विकासावसर	49.425	3.987	48.350	5.461	1.006	NS
व्यावसायिक वृद्धि के अवसर	43.425	5.856	42.075	5.350	1.077	NS
कार्यसंगठनात्मकता के विधान	48.700	6.325	48.500	6.241	0.142	NS
कार्य जीवन संतुलन	44.925	5.880	43.900	5.589	0.799	NS
सामाजिक प्रासंगिकता	45.800	3.400	44.625	4.175	1.381	NS

df=78

0.05 सार्थकता स्तर पर टी–मान=1.99

0.01 सार्थकता स्तर पर टी–मान=2.64

उपर्युक्त सारणी के अनुसार कुल न्यादर्श पर राजकीय तथा निजी विद्यालयों के संस्थाप्रधानों की विद्यालयी कार्यरत जीवन की गुणवत्ता की गणना से प्राप्त मानक विचलन 25.889 व 32.205 प्राप्त हुआ।

दोनों प्राप्त मध्यमानों में से राजकीय विद्यालयों के संस्थाप्रधानों की विद्यालयी कार्यरत जीवन की गुणवत्ता का मध्यमान निजी विद्यालयों के संस्थाप्रधानों से अधिक है। गणना से प्राप्त मध्यमानों में अंतर टी–मान 1.213 है। जो कि टी–सारणी के 0.05 स्तर पर सार्थक टी–मान से कम है। अतः राजकीय तथा निजी विद्यालयों के संस्थाप्रधानों की विद्यालयी कार्यरत जीवन की गुणवत्ता में अंतर नहीं पाया गया। अतः परिकल्पना "राजकीय तथा निजी विद्यालयों के संस्थाप्रधानों की विद्यालयी कार्यरत जीवन की गुणवत्ता में कोई सार्थक अंतर नहीं होता है।"

सारणी संख्या 03 : ग्रामीण तथा शहरी विद्यालयों के संस्थाप्रधानों की विद्यालयी कार्यरत जीवन की गुणवत्ता एवं आयामों पर मध्यमान, मानक विचलन व टी–मान

आयाम का नाम	ग्रामीण वि. के संस्थाप्रधान (N=40)		शहरी वि. के संस्थाप्रधान (N=40)		टी–मान	सार्थकता स्तर
	मध्यमान	मा.विचलन	मध्यमान	मा.विचलन		
कुल	321.475	29.385	336.300	27.667	2.323*	S
स्वस्थ कार्य परिस्थितियां	55.070	5.570	57.150	5.406	1.695	NS
समुचित क्षतिपूर्ति	41.850	6.413	43.975	4.168	1.758	NS
मानवीय धार्यक्षमता विकासावसर	47.725	5.206	50.050	4.062	2.227*	S
व्यावसायिक वृद्धि के अवसर	41.800	5.187	43.700	5.925	1.526	NS
कार्यसंगठनात्मकता के विधान	47.350	7.013	49.850	5.165	1.816	NS
कार्य जीवन संतुलन	42.975	5.707	45.850	5.443	2.306*	S
सामाजिक प्रासंगिकता	44.700	4.020	45.725	3.605	1.200	NS

df=78

0.05 सार्थकता स्तर पर टी–मान=1.99

0.01 सार्थकता स्तर पर टी–मान=2.64

उपर्युक्त सारणी के अनुसार कुल न्यादर्श पर ग्रामीण तथा शहरी विद्यालयों के संस्थाप्रधानों की विद्यालयी कार्यरत जीवन की गुणवत्ता की गणना से प्राप्त मध्यमान 321.475 व 336.300 तथा मानक विचलन 29.385 व 27.667 प्राप्त हुआ। दोनों प्राप्त मध्यमानों में से ग्रामीण विद्यालयों के संस्थाप्रधानों की विद्यालयी कार्यरत जीवन की गुणवत्ता का मध्यमान शहरी विद्यालयों के संस्थाप्रधानों से कम है। गणना से प्राप्त मध्यमानों में अंतर का टी–मान 2.323 है। जो कि टी–सारणी के 0.05 स्तर पर सार्थक टी–मान से 1.99 से अधिक है। अतः ग्रामीण तथा शहरी विद्यालयों के संस्थाप्रधानों की विद्यालयी कार्यरत जीवन की गुणवत्ता में अंतर पाया गया। अतः परिकल्पना "ग्रामीण तथा शहरी विद्यालयों के संस्थाप्रधानों की विद्यालयी कार्यरत जीवन की गुणवत्ता में कोई सार्थक अंतर नहीं होता है।"

शोध से प्राप्त निष्कर्षः–

अतः निष्कर्ष स्वरूप– संस्थाप्रधानों को क्षतिपूर्ति के रूप में विभाग द्वारा दिया जा रहा उचित प्रतिफल यथा चिकित्सा सुविधाऐं, विभगीय वेतन पारिश्रमिक सम्मान तथा भत्ते आदि उनकी कार्यरत जीवन की गुणवत्ता को औसत से अधिक करने में सहायक पाये गये।

- राजकीय तथा निजी विद्यालयों के संस्थाप्रधानों की विद्यालयी कार्यरत जीवन की गुणवत्ता में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया।
- ग्रामीण तथा शहरी विद्यालयों के संस्थाप्रधानों की विद्यालयी कार्यरत जीवन की गुणवत्ता के के तृतीय एवं षष्ठम आयामों क्रमशः मानवीय धार्यक्षमता विकासावसर, कार्यजीवन संतुलन पर उपर्यक्त दोनों की प्रकार के विद्यालयों के संस्थाप्रधानों में सार्थक अंतर पाया गया।

संदर्भ ग्रंथ सूची :

1. Bass, B.M. : Leadership and Performance Beyond Expectation, Free Press, New York, 1985
2. Elias : M.S., Arnold, H., and Hussey, C.S. : EQ+IQ = Best Leadership Paractices for Caring and Successful Schools, Corwin Press, Thousand Oaks, CA, 2003
3. Yukl Gray : Leadership in Organizations (6th ed.) Upper Saddle River, NJ : Pearson, Printice Hall, 2006